IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

एकात्म मानववाद : समग्र दर्शन

डॉ0 राजीव रंजन पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, आर0 बी0 जी0 आर0 कॉलेज, महाराजगंज, सिवान, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

एकात्म मानववाद वैचारिक दर्शन का प्रतिपादन पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मुबंई में 22–25 अप्रैल, 1965 में चार अध्यायों में दिए गए भाषण में किया। इन्होंने साम्यवाद एवं समाजवाद की खामियों का अवलोकन कर समन्वयकारी समग्र विकास चिंतन के रूप में **''एकात्म मानववाद''** विचारधारा प्रस्तुत किया।[1]

यह भारतीय ज्ञान परंपरा का एक समग्र दर्शन, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का मार्ग, साबित हुआ। यह दर्शन भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास है। एकात्म मानववाद, शरीर, मन, बुद्वि एवं आत्मा का समुच्चय है, जो परस्पर एक दूसरे से जुड़ा है, जो एकांगी न होकर, परस्पर सहयोग के साथ सर्वांगीण विकास है। एकात्मवाद एक ऐसी धारणा है, जिसके केंद्र में व्यक्ति है, और व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व, बह्माण्ड इन सबसे घिरा और अपने अंदर ही इन सबको समाये है। उसे समग्रता के साथ ही अपने आप को सुख देना है, न कि एकांगी होना। न्याय अनुसार **''यत पिंडे, तत बह्माण्डे''** समष्टि का जीवंत प्रतिनिधि एवं उपकरण है।[2]

व्यक्ति व समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि भारतीय दर्शन के पुरूषार्थ चतुष्टाय (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) के अनुरूप व्यक्ति और समाज की भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो।[3] जो कि शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का समुच्चय, परस्पर निर्भरता सहयोगात्मक है।[4]

1. मानव जीवन के सभी पहलुओं का संतुलित समग्र विकास।
2. व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं बह्माण्ड के बीच सामंजस्य, समन्वयकारी, परस्पर सहयोग निर्भरता **एकात्मकता।**
3. भारतीय संस्कृति और परंपरा का आधुनिकता के साथ वैज्ञानिक तार्किक मेल **स्वदेशी चिंतन**, जिससे सामंजस्यकारी लाभकारी समाधान हो।

4. भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के मध्य संतुलन, पुरूषार्थ चतुष्टय पालन।

व्यक्ति एवं समाज का संतुलन

- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता –** व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, विविधता का सम्मान।
- **समाजिक दायित्व –** समाज के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी।
- **पारस्परिक सहयोग–** व्यक्ति एवं समाज के मध्य सहयोग भावना एवं सामूहिक हितों का संरक्षण।

सिर्फ स्वयं की अच्छी व्यवस्था, शांति प्राप्त कर लेने से आप लंबे काल तक सुख–समृद्धि नहीं पा सकते, जब तक आपसे घिरा समाज स्वस्थ न हो, अतः प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेवारी बनती है, कि वह स्वयं के साथ समाज को स्वस्थ करने में पारस्परिक सहयोग दे। ये न चरम व्यक्तिवाद, न पूर्ण समाजिक व्यक्तिवाद है, बल्कि मध्य, समन्वयकारी है।

पारंपरिक, सांस्कृतिक भारतीय मूल्यों का आधुनिकीकरण

- **विविधता में एकता, समन्वयकारी सिद्धांत।**
- **प्राचीन मूल्य–** वसुधैव कुटुम्बकम,[5] सारा विश्व अपना ही परिवार है। सर्वे भवन्तु सुखिनः[6]।
- **समाजिक न्याय–** धन का न्यायसंगत वितरण, जहाँ किसी भी वर्ग का शोषण न हो, सबको भागीदारी मिले।
- **तकनीकी** प्रगति के साथ सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण।
- पंचायती राज व्यवस्था, ग्रामीण विकास मजबुत करना।

समुच्चय सिद्धांत

व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का समुच्चय है, इसके समग्र विकास हेतु पुरूषार्थ चतुष्टाय पालन आवश्यक है।

- **शरीर** के अंतर्गत स्वास्थ्य पोषण, आवास एवं वस्त्र मूलभूत आवश्यकता।
- मन के अंतर्गत व्यक्तिगत गरिमा व सम्मान, सामाजिक स्वीकृति मानसिक शांतता।
- बुद्धि के अंतर्गत शिक्षा एवं कौशल, तार्किक सोच, समाधान है।
- आत्मा के अंतर्गत नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक शुद्धि, अहम परित्याग सत्य एवं परमात्मा अन्वेषण यात्रा।

ये चारों एकांगी नहीं, बल्कि पारस्परिक निर्भर सहयोगात्मक भावना है, जहॉ पर किसी पक्ष के साथ संकीर्णता न होकर, समुचित समग्र विकास हो। इनमें से एक का अभाव सामाजिक विकृति पैदा कर सकता है।

अंत्योदय अवधारणा

- **सबसे गरीब की प्राथमिकता–** अंतिम सिरे पर खड़ा, अभावयुक्त जातिरहित किसी भी गरीब व्यक्ति का उत्थान।
- **स्वदेशी स्वावलंबन–** विदेशी निर्भरता कम करके, स्वदेशी स्थानीय उत्पादन बढ़ाने पर जोर।

पुरूषार्थ चतुष्टाय

- **धर्म–** नैतिक आचरण, कर्त्तव्य निष्ठा, इहलौकिक और पारलौकिक सुख के साथ दुःखनिवृति (मोक्ष अग्रसर)।
- **अर्थ–** आर्थिक समृद्धि, न्यायसंगत धनार्जन एवं समुचित वितरण।
- **काम–** इच्छाओं की पूर्ति और सामाजिक संबंध, संयमित भोग, पारिवारिक मूल्य।
- **मोक्ष–** आध्यात्मिक शुद्धि, अहम परित्याग, शांति, सत्य अन्वेषण दुःखनिवृति, समाधान।

धर्म के अंतर्गत ही 'न्यायसंगत' धनार्जन (अर्थ) एवं संयमित भोग (काम) करने पर ही, मनुष्य मोक्ष का अधिकारी होता है। मोक्ष में स्वयं के प्रति शांति समता तो है ही, साथ–साथ समग्र सत्ता के प्रति भी नर–नारायण तपस्या की तरह ''परमकल्याण'' चित्त की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. शर्मा, डॉ0 महेश चन्द्र, दीनदयाल उपाध्यायः कृतित्त्व व विचार, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ0– 107, 133.
2. वहीं, पृ0– 135.
3. बघेल, अंजू, प0 दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों का दर्शन, स्वरांजलि पब्लिकेशन, दिल्ली, 2018, पृ0– 96.
4. उपाध्याय, दीनदयाल, एकात्म मानववाद, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2016, पृ0– 63.
5. महाउपनिषद्, 6.71
6. वृहदारण्यक उपनिषद, 1/4/14